Indian J.Soc & Pol. 03(03):2016:117-120 **ISSN 2348-0084 (PRINT)**
(Special Print Issue: September, 2016) **ISSN 2455-2127(ONLINE)**

शिक्षा एवं विकास में सम्बन्ध : समाजवैज्ञानिक अध्ययन

विपिन प्रकाश सिंह[1]

[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाज़शास्त्र विभाग, उदय प्रताप महाविद्यालय, वाराणसी, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। इसके द्वारा व्यक्ति उन बातों को सीखता है जो कि उसके सामाजिक जीवन में अनुकूलन के लिए आवश्यक होती हैं। शिक्षा एक ऐसा जागरूक शिक्षण कार्यक्रम प्रदान करती है जो कि मूल्यों, प्रतिमानों एवं सामाजिक कुशलता के विकास में सहायक होती है।शिक्षा एवं समाज में अटूट सम्बन्ध है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है। शिक्षा द्वारा व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान को प्राप्त करता है एवं ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में नए–नए अनुसन्धान करता है। नई–नई बातों की खोज करके पहले भौतिक संस्कृति व बाद में अभौतिक संस्कृति में परिवर्तन लाने में योगदान देता है। प्रत्येक समाज के कुछ स्थायी और शाश्वत मूल्य होते हैं। इन्हीं मूल्यों के बल पर समाज स्थायित्व प्राप्त करता है। जब किसी सामाजिक परिवर्तन के कारण इन स्थायी मूल्यों की दुर्बलता आ जाती है और सामाजिक संघटन विघटित होने लगता है तब ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा उन मूल्यों की रक्षा करती है और आने वाली पीढ़ी को उनका ज्ञान कराती है।

***KEY WORDS:** शिक्षा, विकास, सामाजिक जीवन*

समाज में नए–नए परिवर्तन होते रहते हैं। सभी परिवर्तन प्रगतिशील नहीं होते। समाज में कुछ व्यक्ति इन परिवर्तनों को अपना लेते हैं और कुछ नहीं अपना पाते। प्रगतिशील परिवर्तनों को समाज द्वारा स्वीकार करने हेतु शिक्षा व्यक्तियों को मानसिक रूप से तैयार करती है तथा उचित एवं आवश्यक वातावरण का निर्माण करती है। ओटावे का कहना है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का अनुगमन करती है। वस्तुतः समाज में सर्वोत्तम परिवर्तन व्यक्ति के स्वभाव में परिवर्तन करके लाया जा सकता है और ऐसा करने की सर्वोत्तम साधन शिक्षा है। कोठारी आयोग ने भी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिवर्तनों के सशक्त माध्यम के रूप में शिक्षा को माना है। शिक्षा एक जन संस्था है जिसके मुख्य दशाओं का निर्धारण राजनैतिक प्रक्रियाओं द्वारा होता है। वर्तमान समाज में यह औपचारिक तथा अनिवार्य दोनों ही है। एक औसत बालक के सामाजीकरण के लिए अर्जित प्रस्थिति प्राप्त करने के लिए शिक्षा ही सबसे महत्वपूर्ण साधन है। समाज में शिक्षा बहुत सारी महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाने के साथ ही विषम एवं अनेकतावादी समाज को एकीकृत करने में सहायता करती है। शिक्षा विकास तथा आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण रूप से सहायक होती है।

शिक्षा के द्वारा जो कुशलताएँ एवं मूल्य सीखे जाते हैं वे आर्थिक तथा व्यावसायिक संरचना के काम करने के तरीके से, घनिष्ठता से जुड़ा है। शिक्षा व्यक्तियों को उस प्रकार की कुशलताओं से प्रशिक्षित करती है जो कि अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक होती है। शिक्षा और अर्थव्यवस्था के बीच का सम्बन्ध इस बात से स्पष्ट किया जा सकता है कि इन्जीनियरिंग उद्योगों की संख्या एवं उत्पादन क्षमता इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षा ने किस गुणवत्ता से और कितने इन्जीनियरों को प्रशिक्षित किया है। यह सामाजिक विकास में शिक्षा के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट करता है। उदाहरण के लिए साक्षरता आर्थिक एवं सामाजिक विकास को तीव्र करती है और यही कारण है कि सभी विकासशील देशों में बड़े पैमाने पर साक्षरता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

विकास के क्षेत्र में शिक्षा का योगदान गतिशील एवं बहुआयामी है। शिक्षा विकास की नई स्थितियों को नियन्त्रित करती है तथा यह खुद समाज की संरचना द्वारा निर्देशित होती है। समाज यह निश्चित करता है कि उसके सदस्यों को दी जाने वाले शिक्षा का स्वरूप कैसा हो। समाज का स्वरूप बदलने पर शिक्षा का स्वरूप बदलता है और शिक्षा के कारण सामाजिक परिवर्तन होता है। उदाहरण के लिए भारत का प्राचीन समाज स्तरीकृत समाज था। इसमें बदलाव लाने की दृष्टि से संविधान में समता आधारित समाज की कल्पना की गयी तथा धर्मनिरपेक्षता को भी महत्त्व दिया गया। इन आदर्शों ने शिक्षा को प्रभावित किया। वर्तमान में भारत सहित सभी विकासशील देशों में शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है क्योंकि इसे सामाजिक विकास के लिए आवश्यक सोपान माना जा रहा है। यद्यपि बहुधा सामाजिक और व्यावसायिक गतिशीलता के लिए अवसरों की कमी होना निर्धन व्यक्तियों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित नहीं कर पाता।

1.Corresponding Author

शैक्षणिक परिवर्तन देश के सामाजिक आर्थिक संरचना में परिवर्तन को प्रभावित कर सकते हैं। जैसे कि निर्धन लोगों में साक्षरता, नैतिकता और जागरूकता को बढ़ाती है तथा उन्हें विभिन्न संगठनों में संगठित करती है। उदाहरण के लिए उपभोक्ता, संगठन, मजदूर यूनियन आदि। यह परिवर्तन निर्धन लोगों के निर्णय निर्माण की प्रक्रिया में बढ़ते हुए संगठित सहभागिता के द्वारा देश में बृहद राजनैतिक परिवर्तनों को ले आते है। अन्ततः सामाजिक आर्थिक संरचना उस दिशा की ओर ले जाती है जिसकी नियोजकों ने भी अपेक्षा नहीं की हो।

शिक्षा उपरोक्त तथ्यों के बाद भी देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए एक अत्यन्त सहायक एवं आवश्यक भूमिका निभाती है। आधुनिकीकरण का शिक्षा से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तेज करने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभर कर सामने आती है। आज विकासशील देशों की प्रमुख आवश्यकता है वैज्ञानिक तथा औद्योगिक आत्मनिर्भरता जिसके लिए शिक्षा महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। प्रौद्योगिकी एवं वैज्ञानिक रूप से आत्मनिर्भर देश ही विकास के उन लक्ष्यों को प्राप्त कर पाएगा जिसका मानक विकसित देश है साथ ही, इसके द्वारा वह विकसित देशों की औपनिवेशिक नीति तथा निर्भरता के दायरे से बाहर निकलने में सफल हो पाता है। देश के उद्योगों तथा कृषि के लिए आवश्यक प्रशिक्षित लोगों की पूर्ति शिक्षा के माध्यम से होती है। किसी भी देश के चाहे वो विकसित हो या विकासशील, उद्योगों तथा कृषि में कितने कुशल व्यक्ति कार्यरत हैं, इससे उस देश की आर्थिक क्षमता, उत्पादन तथा विकास की दर प्रभावित होती है।

देश में राजनैतिक एवं प्रशासनिक संस्थाओं को प्रभावशाली ढंग से संचालित करने में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। समाज में लोगों के मूल्यों और मनोवृत्तियों में परिवर्तन शिक्षा द्वारा सम्भव हो पाता है। लोग समाज के अवरोधक बन्धनों, धर्मान्धता, संकीर्णता के दायरे से बाहर निकलकर वैज्ञानिकता एवं तार्किकता के साथ समाज के यथार्थ को समझने का प्रयत्न करते हैं और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। निर्धनता, जनसंख्या विस्फोट, बीमारी, धार्मिक कट्टरता जैसी बहुत सी समस्याओं के पीछे का मूल कारण लोगों में अशिक्षा एवं अज्ञानता होती है। शिक्षा इन अनेक सामाजिक समस्याओं को दूर करने के साथ ही समाज में मानवतावाद, सहिष्णुता एवं तार्किकता का विकास करती है जिससे समाज में समता तथा न्याय को प्रश्रय मिलता है।

विकास के सन्दर्भ में शिक्षा के ये सभी तर्क स्पष्ट करते हैं कि, सामाजिक परिवर्तन, विकास या आधुनिकीकरण की प्रक्रियाएँ शिक्षा के अभाव में सम्भव नहीं है तथा शिक्षा एवं आर्थिक सामाजिक विकास में घनिष्ठ सम्बन्ध है, यह एक निर्विवाद सत्य है। शिक्षा मानव संसाधन का विकास करके समाज के सदस्यों को इस योग्य बनाती है कि वे सामाजिक, आर्थिक विकास की प्रक्रिया में सहभागी बन सके। ऐसा होते हुए भी विकास में शिक्षा की भूमिका क्या होगी ये इस बात पर निर्भर करता है कि, किसी समाज में शिक्षा किन मूल्यों और मान्यताओं पर आधारित है तथा वह किस सामाजिक वर्ग का प्रतिनिधित्व एवं संरक्षण करती है अर्थात् विकास में शिक्षा की भूमिका सकरात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही हो सकती है।

शिक्षाविदों ने सैद्धान्तिक दृष्टि से शिक्षा की भूमिका की विवेचना की है। प्रसिद्ध चिन्तक पॉलोफ्रेरे का यह मत है कि पूँजीवादी समाज में शिक्षा पूँजीवादी हितों का सम्वर्द्धन करती है। उनके अनुसार शिक्षा एक ऐसा वैचारिक उपकरण है जो, राज्य के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था का नियन्त्रण एवं निर्देशन इस प्रकार से करती है कि, समाज का साधन सम्पन्न वर्ग ऐसी विशेषज्ञ शिक्षा को प्राप्त कर सके जिससे समाज में उसका वर्चस्व बना रहे तथा दूसरी ओर शिक्षा समाज के साधनविहीन वर्ग को इस प्रकार प्रशिक्षित करती है कि वह स्थापित व्यवस्था को सहज रूप से स्वीकार करते हुए अपनी निम्न स्थिति के अनुरूप कार्य करता रहे।

फ्रांसीसी विचारक लुई अल्थूजर ने शिक्षा को श्रम के पुर्नउत्पादन की प्रक्रिया माना है। यह कार्य दो प्रकार से किया जाता है–प्रथम, श्रमिक वर्ग को ऐसी कुशलता और दक्षता प्रदान कर के जिससे वह उत्पादन प्रक्रिया में अपनी निश्चित भूमिका का निर्वाह कर सके, द्वितीय शक्ति सम्पन्न और सत्ताशील वर्ग की वैचारिकी का श्रमिक वर्ग में प्रत्यारोपण करना। पूँजीवादी व्यवस्था के लिए आवश्यक है कि श्रमिक वर्ग, कुशल एवं दक्ष होने के साथ–साथ आज्ञाकारी एवं विनम्र हो। पूँजीवादी समाज में शिक्षा अत्यन्त प्रारम्भ से ही इस वर्गीय वैचारिकी का हस्तानान्तरण श्रमिक वर्ग में करती है।

अमेरिकी अर्थशास्त्री सैम्यूअल वॉवैल्स और हरबर्ट जिन्टीस ने कहा है कि, पूँजीवादी समाज में शिक्षा की भूमिका श्रमिक वर्ग के मनोवृत्ति, दृष्टिकोण एवं व्यक्तित्व को इस प्रकार विकसित करना है कि वो अपने शोषण की स्थिति को सहज एवं स्वाभाविक रूप से स्वीकार करें। शिक्षा के उपरोक्त वैचारिकी भूमिका को विकासशील समाजों के सन्दर्भ में देखा जा सकता है।

प्रकार्यवादी समाजशास्त्री समाज पर शिक्षा के सकारात्मक प्रभाव को स्वीकार करते है। एमिल दुर्खीम का मत

है कि, ''कोई समाज तभी जीवित रह सकता है कि जबकि, उस समाज के सदस्यों में पर्याप्त रूप में समानता हो। शिक्षा उस समरूपता को स्थायी बनाती है और सवंर्धित करती है।'' दुर्खीम का मत है कि जटिल औद्योगिक समाजों में शिक्षा उन कार्यों को सम्पादित करती है जिसे, परिवार या मित्र समूह नहीं कर सकता है। पारसन्स कहते है कि, विद्यालय नवयुवकों का समाज के मूलभूत मूल्यों में समाजीकरण करता है। आधुनिक समाज के विद्यालय नवयुवकों को न केवल उन मूलभूत मूल्यों में समाजीकरण करता है। आधुनिक समाज के विद्यालय नवयुवकों को न केवल उन मूलभूत मूल्यों का सम्मान करने की शिक्षा देते हैं बल्कि, उन्हें नए समाज के लिए अनिवार्य कुशलता और गुणों से युक्त करने का कार्य करते हैं। समाज में शिक्षा की प्रकार्यवादी भूमिका को डेविस और मूर के अनुसार भी महत्त्व प्रदान किया गया है। उनके अनुसार सामाजिक स्तरीकरण एक ऐसी व्यवस्था है जिसके द्वारा व्यक्ति को योग्यतानुसार विभिन्न पदों पर स्थापित किया जाता है। यह समाज में महत्वपूर्ण पदों के लिए योग्य व्यक्तियों को तैयार करता है।

समाजशास्त्रियों का एक वर्ग ऐसा भी है जो शिक्षा पर सामाजिक संरचना के प्रभाव को महत्त्व देता है। इसे मार्क्सवादी व्याख्या में देखा जा सकता है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा व्यवस्था का निर्धारण समाज की वर्ग व्यवस्था द्वारा होता है। समाज का अभिजात्य वर्ग सत्ता के प्रभाव द्वारा शिक्षा को इस प्रकार व्यवस्थित करता है कि, शिक्षा उसके हितों को सुरक्षित रखें। लुई अल्थूजर का कथन है कि, शिक्षा सुपरस्ट्रक्चर का हिस्सा है जो इन्फ्रास्ट्रक्चर द्वारा निर्मित होती है।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में विकास के सन्दर्भ में शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण निजीकरण, उदारीकरण और वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं के द्वारा भी किया जा सकता है। इन प्रक्रियाओं का मूल मन्त्र है बाजार की शक्तियाँ (डंतामज थ्वतबमे) अर्थात् बाजार में वही वस्तु चल पाएगी जो स्पर्धा मूल्य पर उपलब्ध हो और जो उपयोगी हो। लाभ इस नवीन आर्थिक दर्शन का आधार है। इन नवीन प्रवृत्तियों के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था का तेजी से बाजारीकरण हुआ है। निजी शिक्षण संस्थाएँ, कोचिंग इन्स्टीट्यूट, प्रवेश परीक्षा एवं चयन परीक्षाओं से सम्बन्धित संस्थाओं की संख्या बढ़ चुकी है। व्यावसायिक विषयों से सम्बन्धित कोचिंग संस्थाओं का शिक्षण–प्रशिक्षण अत्यधिक महँगा है। मैनेजमेंट, कम्प्यूटर, इन्जीनियरिंग और मेडिकल की शिक्षा प्राप्त करने के लिए आज केवल योग्यता की आवश्यकता ही नहीं बल्कि साधन सम्पन्नता की भी आवश्यकता है। आज शिक्षा एक कमोडिटी अर्थात् बाजार में बेचने व खरीदने की वस्तु बन गई है जिसे वही खरीद सकता है जिसमें खरीदने की शक्ति हो। अतः शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले ये परिवर्तन समाज में वर्ग भेद को और बढ़ा रहे है। जिस वर्ग के पास पूँजी होगी उस वर्ग के पास ज्ञान होगा।

भारत जैसे कल्याणकारी राज्य में भी प्रारम्भ में शिक्षा को कल्याणकारी प्रकार्यों में अत्यन्त उच्च स्थान दिया गया। अनुसूचित जाति, जनजाति, महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक शैक्षणिक कार्यक्रम चलाए गए। शिक्षा में आरक्षण, शुल्क मुक्ति, छात्रवृत्ति, छात्रावास की सुविधा आदि के माध्यम से निर्बल वर्ग के उत्थान का प्रयास किया गया। व्यापक स्तर पर शैक्षणिक संस्थाओं के संचालन के लिए राजकीय अनुदान की व्यवस्था प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक की गई किन्तु अब सरकारें अनुदानों को सीमित करती जा रही हैं। स्ववित्तपोषित शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है। शिक्षा को निजी क्षेत्र में हस्तान्तरित करके उसे आर्थिक लाभ अर्जित करने की व्यवस्था का रूप दिया जा रहा है। शिक्षा में इस नीति के परिणामस्वरूप समाज के निर्बल वर्ग के शैक्षणिक उत्थान की प्रक्रिया बाधित होगी तथा समाज में वर्ग अन्तराल को बढ़ावा मिलेगा। अतः विकास के सन्दर्भ में शिक्षा के इन परिवर्तनशील भूमिकाओं को भी समझना होगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि शिक्षा एवं विकास के मध्य अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। शिक्षा के द्वारा सामाजिक संरचनाओं, सामाजिक स्तरीकरण एवं सामाजिक विचारधारा के प्रारूप में परिवर्तन लाया जाता है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का चालक यन्त्र माना जाता है। शैक्षणिक व्यवस्था आर्थिक व्यवस्था को भी प्रभावित करती है। महान अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन भी शिक्षा तथा स्वास्थ्य को आधुनिक आर्थिक विकास के लिये सबसे प्रमुख तत्त्व मानते हैं अर्थात् शिक्षा ने हमारे शारीरिक, बौद्धिक तथा नैतिक ज्ञान के साथ–साथ वर्ग चेतना तथा नृजातीय चेतना को जागृत कर अनेक सामाजिक आन्दोलन को जन्म दिया है जैसे, नारी आन्दोलन, पर्यावरण आन्दोलन, सामाजिक न्याय के लिए आन्दोलन आदि तो वहीं दूसरी ओर अभिजात वर्ग की निरन्तरता तथा सम्पन्न वर्ग के जनसाधारण से सामाजिक अलगाव में भी यह एक महत्त्वपूर्ण कारक है।

सन्दर्भ

घोष, सुरेश चन्द्र, द हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन मॉडर्न इण्डिया, ओरिएंट लौंगमैन, नई दिल्ली, 1995.

शुक्ला, सुरेशचन्द्र एवं कौल, रेखा (सं.) एजुकेशन, डेवलपमेंट एण्ड अंडरडेवलपमेंट, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

इण्डिया टुडे, 17 नवम्बर, 2003, 60–61 पेज।

द्विवेदी, आर.एन. (सं.) ''सामाजिक विमर्श'', अंक – प्रथम, 2007, वाराणसी।

सिंह, शिवबहाल, विकास का समाजशास्त्र, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014.

हक एहसानुल, स्कूल, फैमिली एण्ड मीडिया, रावत प्रकाशन, जयपुर, 1995.

भाटिया, एस. सी., 1982 ''एजुकेशन एण्ड सोशियो–कल्चरल डिसएडवांटेज'' दिल्ली, जैरेजस पब्लिशर्स।

पाठक, अभिजीत, सोशल इंपलिकेशंस ऑफ स्कूलिंग, रेनबो पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2002.

दैनिक जागरण (दैनिक समाचार पत्र), 28 सितम्बर, 2016, पेज–10–11.

त्यागी, गुरुसरन दास एवं नन्द, विजयकुमार, ''उदीयमान भारत में शिक्षा'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2002.

आहुजा, राम, ''भारतीय समाज'', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली।

अल्टेकर, ए. एस. 1965, एजुकेशन इन इण्डिया, वाराणसी, नंदकिशोर।